



भूगोल-विभाग

एम०ए०- प्रथम सेमेस्टर

शैक्षणिक भ्रमण

मैहर, चित्रकूट, प्रयागराज

सत्र - 2021-22

(दिनांक- 02.06.2022 से 04.06.2022)

पर्यटन निर्देशक

डॉ० सदानन्द यादव (प्रवक्ता)

छात्र

सौरभ कुमार सिंह

एम०ए०-प्रथम सेमेस्टर

रोलनं 10622845003





प्रमाण - पत्र

दिनांक:

प्रमाणित किया जाता है कि सौरभ कुमार सिंह ,एम०ए०-प्रथम सेमेस्टर,भूगोल विभाग,हरिश्चन्द्र स्नातकोत्तर महाविद्यालय,वाराणसी का छात्र है।

इन्होंने मेरे निर्देशन में अपनी पाठ्यक्रम के अनुसार 02.06.2022 से 04.06.2022 की अवधि में शैक्षणिक भ्रमण सम्पन्न किया है।

डॉ० शिवानन्द यादव

(विभागाध्यक्ष, भूगोल विभाग)
हरिश्चन्द्र स्नातकोत्तर महाविद्यालय
वाराणसी

डॉ० सदानन्द यादव

(प्रवक्ता, भूगोल विभाग)
हरिश्चन्द्र स्नातकोत्तर महाविद्यालय
वाराणसी

आभार-पत्र

मैं सौरभ कुमार सिंह ,एम०ए०-प्रथम सेमेस्टर (भूगोल-विभाग),हरिश्चन्द्र स्नातकोत्तर महाविद्यालय का छात्र हूँ। मैंने अपना पर्यटन सूचना आदरणीय डॉ० सदानन्द यादव (प्रवक्ता, भूगोल-विभाग) के निर्देशन में तैयार किया है। मैं विभाग के अध्यापक श्री मती कुसुम यादव तथा अमर प्रताप सिंह का आभार प्रकट करता हूँ, जिन्होंने शैक्षणिक भ्रमण का सुनहरा अवसर प्रदान किया।

अध्यापकों के अलावा विभाग के परिवार श्री जितेन्द्र यादव के प्रति मैं आभार प्रकट करता हूँ। मैं अपने सहपाठियों के प्रति भी आभार प्रकट करता हूँ, जिन्होंने पूरे शैक्षणिक भ्रमण के दौरान अपना बहुमूल्य सहयोग प्रदान किया।

मैं अपने माता-पिता के प्रति भी आभार प्रकट करता हूँ, जिन्होंने मुझे शैक्षणिक भ्रमण पर जाने के लिये आर्थिक सहायता प्रदान की।

सधन्यवाद !

सौरभ कुमार सिंह

एम०ए०-प्रथम सेमेस्टर

भूगोल-विभाग

हरिश्चन्द्र स्नातकोत्तर महाविद्यालय

वाराणसी

प्रस्तावना

जिस ग्रह के हम निवासी हैं,अर्थात् पृथ्वी, जिसके बारे में जानने के लिए विभिन्न माध्यमों (किताबें, समाचार पत्र, अंतरिक्ष यान, विभिन्न प्रकार की सूचनाएं

इत्यादि) के अलावा हमें भ्रमण की भी आवश्यकता पड़ती है। पृथ्वी के धरातल के विषय में जानने के लिए उसका प्रत्यक्ष अवलोकन करना अत्यन्त जरूरी होता है। अपने देश के विभिन्न भागों में रह रहे लोगों, वहाँ के रिति-रिवाज, समाज, धरातलीय बनावट, प्रकृतिक दृश्यावली इत्यादि को भ्रमण के माध्यम से अच्छी तरह समझा व जाना जा सकता है। मानव एक जिज्ञासु प्राणी है जिससे वह अनेक प्रकार के खोज करता रहता है और विभिन्न स्थानों का अवलोकन व अध्ययन गहराई से करता है।

देश के विभिन्न क्षेत्रों के असीम व अलौकिक सौंदर्य को निहारने के लिये मानव विभिन्न क्षेत्रों में घूमने के लिये जाता रहता है। जितना आनन्द प्रत्यक्ष अवलोकन में होता है उतना आनन्द किताबी बातों को पढ़ने से नहीं मिलता है। भ्रमण से हमें अनेक लाभ मिलते हैं, जिस क्षेत्र में भ्रमण किया जाता है वहाँ की संस्कृति, सामाजिक संगठन, जलवायु, भौगोलिक दृश्यादि के बारे में जानकारी प्राप्त हो जाती है। इतिहास के पन्नों पर दृष्टिपात करें तो हम पायेंगे कि विश्व में विभिन्न महाद्वीपों एवं द्वीपों की खोज भ्रमण का ही परिणाम है। मानव ने अपने जिज्ञासु स्वभाव के अनुरूप पृथ्वी को जानना चाहा और इसी ललक ने उससे अनेक प्रकार की खोज करवा डाली और वह खोजें भ्रमण के द्वारा ही संभव हुई हैं।

विषय सूची		
अध्याय क्रम	विषय वस्तु	पृष्ठ संख्या

प्रमाण - पत्र

आभार पत्र

प्रस्तावना

प्रथम अध्याय : **मैहर**

- मैहर का इतिहास
- भौगोलिक स्थिति एवं जलवायु
- धार्मिक महत्व

द्वितीय अध्याय :

चित्रकूट

- चित्रकूट का धार्मिक महत्व
- गुप्त गोदावरी
- सती अनुसूईया मंदिर
- स्फटिक शिला
- कामदगिरि पर्वत
- हनुमान धारा

तृतीय अध्याय :

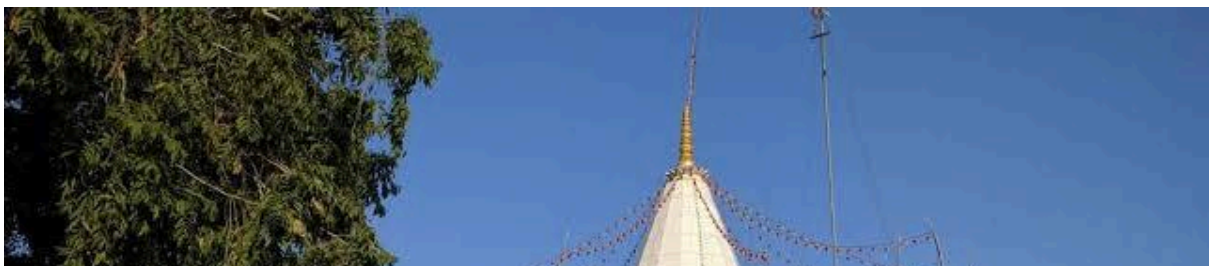
प्रयागराज

- आनन्द भवन
- तारामंडल
- संगम

प्रथम अध्याय

मैहर

मैहर का इतिहास - मैहर इतिहास Paleolithic आयु के बाद से पता लगाया जा सकता है। शहर के पूर्व में मैहर रियासत की राजधानी थी। राज्य 1778 में कुशवाहा कबीले के राजपूतों, जो ओरछा के पास राज्य के शासक द्वारा दी गई भूमि पर स्थापित किया गया। राज्य में जल्दी 19 वीं सदी में ब्रिटिश भारत के एक राजसी राज्य बना था और बुंदेलखंड एजेंसी के मध्य भारत एजेंसी में भाग के रूप में दिलाई. 1871 में बुंदेलखंड के पूर्वी राज्यों, मैहर सहित, मध्य भारत में बगेलखंड की नई एजेंसी फार्म अलग हो गए थे। 1933 मैहर में, दस अन्य राज्यों के साथ साथ पश्चिमी बगेलखंड में, वापस बुंदेलखंड एजेंसी को हस्तांतरित किया गया। राज्य 407 वर्ग मील के एक क्षेत्र है और 1901 में 63,702 की आबादी थी। राज्य है, जो टोंस नदी से पानी पिलाया था जलोढ़ मिट्टी के बलुआ पत्थर को कवर मुख्य रूप से शामिल है और दक्षिण के पहाड़ी जिले में



छोड़कर उपजाऊ है। एक बड़े क्षेत्र में वन के तहत किया गया, जिसमें से एक छोटे से उत्पादन निर्यात व्यापार प्रदान की है। शासक का शीर्षक महाराजा था। राज्य अकाल से 1896-1897 में गंभीर रूप से सामना करना पड़ा. मैहर ईस्ट इंडियन रेलवे (अब पश्चिम मध्य रेलवे) सतना और जबलपुर, 97 मील की दूरी पर जबलपुर के उत्तर के बीच लाइन पर एक स्टेशन बन गया। मंदिरों और अन्य भवनों का व्यापक खंडहर शहर के चारों ओर फैला है।

भौगोलिक स्थिति एवं जलवायु - मैहर 24.27 ° N 80.75 ° E [6] में स्थित है। यह 367 मीटर (1204 फीट) की एक औसत ऊंचाई है। यहां 1063 सीढ़ियां हैं। मैहर अच्छी तरह से आवागमन के माध्यमों से जुड़ा हुआ है। यहां दोनों प्रमुख माध्यम रेल मार्ग और सड़क मार्ग 7 एन एच (राष्ट्रीय राजमार्ग) से जुड़ा हुआ है। शारदा माता मंदिर मैहर रेलवे स्टेशन से 6 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। मंदिर तक आप जाने के लिए रोपवे का भी इस्तेमाल कर सकते हैं। यहां की जलवायु उत्तर भारतीय जलवायु के समान है। जबलपुर स्टेशन 162 किलोमीटर मैहर से दूर स्थित है। मैहर रेलवे स्टेशन पश्चिम मध्य रेलवे के कटनी और सतना स्टेशनों के बीच में स्थित है। नवरात्रि त्योहार के दौरान वहाँ श्रद्धालुओं की भारी भीड़ होती है। इसलिए इन दिनों के दौरान अप और डाउन के सभी ट्रेने यात्रियों की सुविधा के लिए मैहर में रुकती है। निकटतम हवाई अड्डा जबलपुर है।

धार्मिक महत्व - यह कहा जाता है कि जब शिव मृत देवी माँ के शरीर ले जा रहे थे, उनका हार इस जगह पर गिर गया और इसलिए नाम मैहर (मैहर = माई का हार) पड़ गया। एक कहानी यह भी है कि भगवती सती का उर्ध्व ओष्ठ यहां गिरा था। यह एक प्रसिद्ध [हिन्दू तीर्थ](#) स्थल है। यह सतना जिला में है। इन्हीं के नाम से एक विद्यालय खुला है जिसका नाम माँ शारदा धनराजी देवी इंटर कॉलेज है जो कि उत्तर प्रदेश के भदोही के दवनपुर में स्थित है। मैहर में शारदा माँ का प्रसिद्ध मन्दिर है जो नैसर्गिक रूप से समृद्ध कैमूर तथा विंध्य की पर्वत श्रेणियों की गोद में अठखेलियां करती तमसा के तट पर त्रिकूट पर्वत की पर्वत मालाओं के मध्य 600 फुट की ऊंचाई पर स्थित है। यह ऐतिहासिक मंदिर 108 [शक्ति पीठों](#) में से एक है। यह पीठ सतयुग के प्रमुख अवतार नृसिंह भगवान के नाम पर 'नरसिंह पीठ' के नाम से भी विख्यात है। ऐतिहासिक तथ्यों के आधार पर [आल्हाखण्ड](#) के नायक [आल्हा](#) व [ऊदल](#) दोनों भाई मां शारदा के अनन्य उपासक थे। पर्वत की तलहटी में आल्हा का तालाब व अखाड़ा आज भी विद्यमान है।

यहाँ प्रतिदिन हजारों दर्शनार्थी आते हैं किंतु वर्ष में दोनों [नवरात्रों](#) में यहां मेला लगता है जिसमें लाखों यात्री मैहर आते हैं। मां शारदा के बगल में प्रतिष्ठापित नरसिंहदेव जी की पाषाण मूर्ति आज से लगभग 1500 वर्ष पूर्व की है।

देवी शारदा का यह प्रसिद्ध शक्तिपीठ स्थल देश के लाखों भक्तों के आस्था का केंद्र है माता का यह मंदिर धार्मिक तथा ऐतिहासिक है।

वर्तमान में यहां पर आर्थिक दृष्टि से सीमेंट की तीन फैक्ट्रियां कार्यरत हैं। के जे एस के पास इच्छापूर्ति मंदिर पर्यटकों का दर्शनीय स्थल है।



द्वितीय अध्याय

चित्रकूट



चित्रकूट का भौगोलिक विस्तार $24^{\circ}48'$ उत्तर से $25^{\circ}12'$ उत्तरी अक्षांश है तथा $80^{\circ}58'$ से $81^{\circ}34'$ पूर्वी देशान्तर है। यह पूरब से पश्चिम 62 किलोमीटर तथा उत्तर से

दक्षिण 57.5 किलोमीटर तक फैला है। इसके उत्तर में कौशाम्बी, दक्षिण में सतना, पूर्व में प्रयागराज तथा पश्चिम में बान्दा स्थित है।

• चित्रकूट का धार्मिक महत्व

चित्रकूट का अर्थ है “ कई आश्चर्यों से भरी पहाड़ी ”। चित्रकूट भारतवर्ष के उत्तर प्रदेश एवं मध्य प्रदेश राज्यों के सीमाओं पर स्थित है। चित्रकूट धाम मन्दाकिनी नदी के किनारे पर बसा सबसे प्राचीन तीर्थ स्थलों में एक है। उत्तर प्रदेश में 38.2 वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र में फैला शान्त और सुन्दर है तथा चित्रकूट प्रकृति और ईश्वर की अनुपम देन है। चारों ओर से विंध्य पर्वत श्रृंखलाओं और वनों से घिरे चित्रकूट को अनेक आश्चर्यों की पहाड़ी कहा जाता है। मन्दाकिनी नदी के किनारे बने अनेक घाट और मंदिरों पर पूरे साल श्रद्धालुओं का आना जाना लगा रहता है।

माना जाता है कि भगवान राम ने सीता और लक्ष्मण के साथ अपने वनवास के चौदह वर्ष में ग्यारह वर्ष चित्रकूट में ही बिताये थे। इसी स्थान पर ऋषि अत्रि और सती अनुसूईया ने ध्यान लगाया था। ब्रम्हा, विष्णु और महेश ने चित्रकूट में ही सती अनुसूईया के घर जन्म लिया था। रामायण, महाभारत, पुराण, उपनिषद् व साहित्यिक पौराणिक साक्ष्यों में खासकर कालिदास के रचना मेघदूत में चित्रकूट का विशद विवरण प्राप्त होता है। त्रेतायुग का यह तीर्थ स्थल अपने अन्दर स्वर्णिम प्राकृतिक दृश्यावलियों को संजोये रखने के कारण चित्रकूट के नाम से प्रसिद्ध है। यहीं मन्दाकिनी, पयस्विनी और सावित्री के संगम पर श्री राम ने पितृ तर्पण किया था। श्री राम व भ्राता भरत के मिलन का साक्षी तथा श्री राम के वनवास के दिनों का साक्षात् गवाह है।

चित्रकूट का विकास राजा हर्षवर्धन के जमाने में अधिक हुआ। भरत के तीर्थ स्थलों में चित्रकूट को इसलिए भी गौरव प्राप्त है कि इसी तीर्थ स्थल पर भक्तराज हनुमान का सहायता से भक्त शिरोमणि तुलसीदास को प्रभु श्री राम के दर्शन हुए।

चित्रकूट जाते समय हम विभिन्न प्रकार के पर्वतों को देखते हैं तथा वहाँ पर कई प्रकार के वन्य जीवों के निवासों को भी देखते हैं। वहाँ पर अधिक मात्रा में लंगूर, बंदर आदि जन्तुओं का जमावड़ा है। चित्रकूट जाते समय हमें घने वनों से जाना पड़ता है जिसमें ऊँचे – नीचे मार्ग पड़ते हैं, जिससे चित्रकूट की मनोरम छटा का दर्शन होता है तथा उसको देखकर मन प्रसन्नता से भर जाता है। चित्रकूट में विभिन्न प्रकार के मंदिरों, देवालयों का निर्माण किया गया है। चित्रकूट में कुछ स्थान अधिक प्रसिद्ध हैं जिसमें सती अनुसूईया आश्रम व मंदिर, गुप्त गोदावरी, हनुमान धारा आदि स्थान हैं जिसको देखने व दर्शन करने के लिये बड़ी संख्या में लोगों भीड़ इकट्ठा होता है जिससे चित्रकूट की धार्मिक महत्व और अधिक बढ़ जाता है।

गुप्त गोदावरी

पौराणिक कथाओं के अनुसार गोदावरी रावण के मित्र मैनाक पर्वत की पुत्री है। वह सीता जी की बचपन की नैहर की सहेली भी है जब भगवान राम, मां सीता व लक्ष्मण वनवास काल में चित्रकूट आते हैं, तो भगवान की सेवा के लिये गोदावरी महाराष्ट्र (नासिक) से गुप्त रूप में तुंगारन्य पर्वत चित्रकूट में प्रकट होती है। गुप्त रूप से प्रकट एवं विलुप्त होने के कारण से यह यहां गुप्त गोदावरी के नाम से जानी जाती है।

अत्रि – अनुसूईया आश्रम से पश्चिम दिशा में लगभग 12 किलोमीटर दूर गुप्त गोदावरी नामक यह दर्शनीय स्थल अपनी सुरम्य छटा के लिये विश्वविख्यात है। यहां आने वाले यात्री व शैलानी यहां के वन प्रदेश की अद्भुत छटा को देखकर मंत्रमुग्ध हो जाते हैं, यहां की आबो – हवा में इतना माधुर्य है कि पशु – पक्षी भी मोहित हो जाते हैं। यहां पर एक बार जो आता है उसका मन यहां आने को बार – बार आने को लालायित रहता है।

यह गोदावरी नदी सम्पूर्ण पापों का नाश करने वाली है, जो मनुष्य यहां भक्तियुक्त होकर स्नान करता है उसके कई जन्मों के पाप नष्ट हो जाते हैं।

गुप्त गोदावरी में दो गुफाएं हैं, प्रथम गुफा का द्वार अत्यंत सकरा है। इसमें बहुत सावधानी पूर्वक जाना पड़ता है, इसके अन्दर बहुत जगह है तथा यह गुफा सुखी हुई है। इस गुफा से निकलने के बाद दूसरी गुफा जो धनुषाकार है, जिसमें सदैव जल घुटनों तक भरे रहते हैं। इस पर्वत प्रदेश में गुफा के एक – एक पत्थर पर प्रकृति ने सुन्दर चित्र



अंकित किये हैं यहां की जैव विविधता का ही आकर्षण था कि भगवान राम ने अपने वनवास काल के महत्वपूर्ण 11 साल 6 महीने बिताये।

गुप्त गोदावरी भ्रमण का सबसे उपयुक्त समय जुलाई से नवम्बर है, जिसमें वर्षा काल में यह वन प्रदेश अत्यधिक सुहावन एवं चित्ताकर्षक लगता है। यहां का जल अमृत तुल्य है जिसके कल-कल, छल-छल निर्मल जल के मनोहरी निनाद से मानव अपने सम्पूर्ण दुखों को भूल जाता है।

गुफाओं के बारे में कहा जाता है कि जब वनवास काल में भगवान श्री राम 14 वर्षों के चित्रकूट आये थे तब देवताओं ने उनके आने से पूर्व ही इन गुफाओं का निर्माण एवं सजावट की थी। इसी संदर्भ में यह दोहा प्रसिद्ध है –

प्रथमहिं देवन्ह गिरि गुहा राखेउ रुचिर बनाइ।

राम कृपा निधि कछु दिन बास करहिंगे आई।।

गुफा में जाने के लिये यात्रियों को जल से होकर गुजरना होता है। इस गुफा में सभी जगह दो से सवा दो फीट पानी भरा हुआ है, इसमें एक – दो नहीं सात धाराओं में गुप्त गोदावरी बहती है। आगे चलने पर शेषनाग की अद्भुत छटा एवं प्राकृतिक कुर्सियां दृष्टिगोचर होती हैं। आगे जाने पर राम कुण्ड, लक्ष्मण कुण्ड एवं हनुमान कुण्ड के दर्शन होते हैं। आगे जाकर यह गुफा बंद हो जाती है। बाहर आने पर निर्मल पवित्र धारा कई कुंडों में समाहित होकर विलुप्त हो जाती है। यहां पर सरकार द्वारा यात्रियों के घूमने, विश्राम करने व थकान मिटाने के लिए पार्क बनाया गया है।

गुप्त गोदावरी के आस – पास यात्रियों की खाने – पीने एवं नाश्ते हेतु कई छोटी – छोटी दुकानें सजी हुई हैं तथा सजावटी सामानों के लिए भी दुकानें पर्याप्त रूप में मिलती हैं। गोदावरी तीर्थ पर बहुत बड़ा मेला लगता है जिसमें दूर – दूर से दर्शनार्थी यहां दर्शन करने एवं अपनी मनोकामनाएं लेकर आते हैं। प्रत्येक आमावस्या को यहां आने वाले तीर्थ - यात्रियों एवं सैलानियों की संख्या में विशेष वृद्धि देखने को मिलती है। इस तीर्थ के सुरम्य दर्शन नेत्रों को असीम शान्ति प्रदान करते हैं। प्रतिदिन हजारों यात्री एवं शैलानी यहां आकर गुफा के दर्शन करके अपने जीवन को धन्य बनाते हैं।

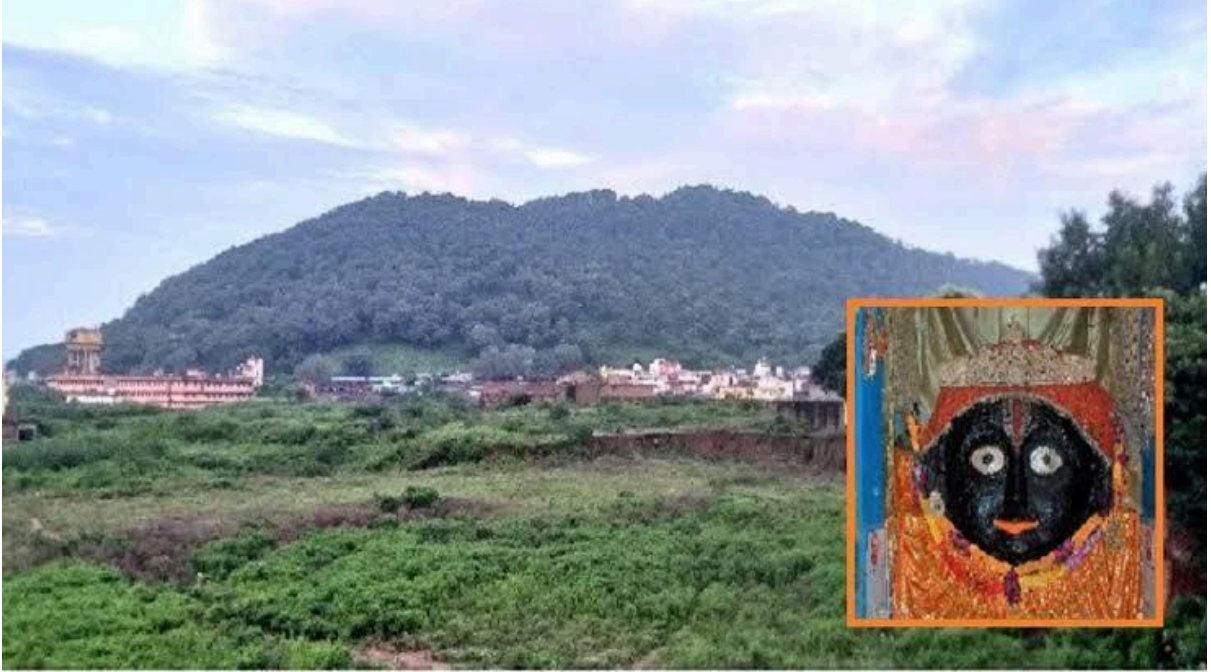


सती अनुसूईया मंदिर



यह आश्रम ऋषि अत्रि के विश्राम स्थान के रूप जाना जाता है। ऋषि अत्रि ने अपने पत्नि सती अनुसूईया के साथ यहाँ ध्यान किया। कथानुसार वनवास के दौरान भगवान राम और माता सीता इस आश्रम में सती अनुसूईया से मिले थे। सती अनुसूईया मंदिर के बाहर रथ पर पीछे सवार अर्जुन के साथ भगवान कृष्ण की एक बड़ी मूर्ति है जो महाभारत दृश्य को दर्शाती है। इस मंदिर के अंदर दिलचस्प कलाकृतियों वाली कई प्रकार की मूर्तियां हैं, जिन्हें पवित्र दर्शन के लिये रखा गया है।

कामदगिरि पर्वत



इस कामदगिरि पर्वत की 5 किलोमीटर की परिक्रमा कर श्रद्धालु अपने मनोकामनाओं के पूर्ण होने की कामना करते हैं। जंगलों से घिरे इस पर्वत के तल पर अनेक मंदिर बने हुए हैं। कामदगिरि पर्वत उत्तर प्रदेश व मध्य प्रदेश के सम्मिलित सीमा क्षेत्र के अंतर्गत आता है। इस पवित्र पर्वत का काफी धार्मिक महत्व है। चित्रकूट के लोकप्रिय कामतानाथ और भरत मिलाप मंदिर भी यहीं स्थित है।

इस पर्वत का नाम भगवान राम के नाम कामधनाथ पर पड़ा है जिसका अर्थ “मनोकामनाओं को पूर्ण करना” होता है। इसके निकट के गांव खोई में भगवत्पीठ धर्मरथ सेवा संस्थान व आश्रम है जो श्रद्धालुओं को रुकने तथा ताजा पानी पीने की सुविधा को उपलब्ध कराता है।

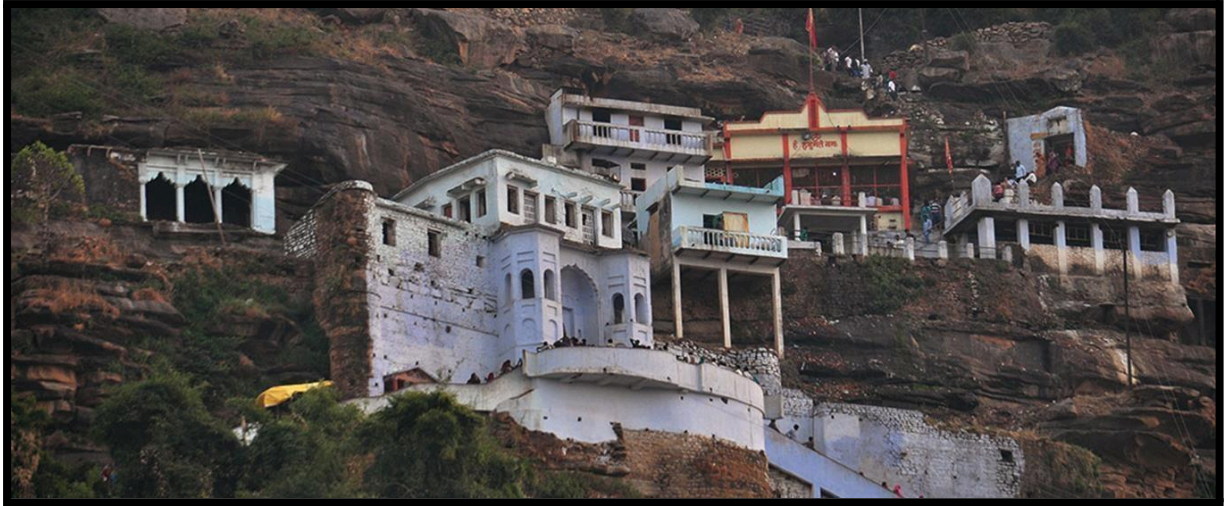
हमने अपने भ्रमण के दौरान श्रीकामदगिरि पर्वत के वनों को देखा तथा कामदगिरि पर्वत के 5 किलोमीटर की परिक्रमा को भी नंगे पाँव पुरा किया जिसके दौरान हमने विभिन्न प्रकार के छोटे – बड़े सभी मंदिरों को देखा तथा कुछ प्रमुख मंदिरों में दर्शन भी किया।

अंततः कामदगिरि पर्वत देखकर तथा उसका परिक्रमा करके हमने सुखद अनुभव किया। कामदगिरि परिक्रमा के दौरान हमने कई प्रकार के जानवरों को देखा

जिसमें बंदर व लंगूर अधिक मात्रा में थे। इसके अलावा हमने कामदगिरि परिक्रमा पथ पर लगे दुकानों को भी देखा जो कई प्रकार के वस्तुओं को बेच रहे थे।



हनुमान धारा



हनुमान धारा में हनुमान जी की एक मूर्ति है जिसके सामने के तालाब में झरने से पानी गिरता है। कहा जाता है कि यह धारा श्री राम ने लंका दहन से आये हनुमान के आराम के लिये बनाई थी। हनुमान धारा पहाड़ी से प्राकृतिक दृश्यों को बहुत ही अच्छे ढंग से देखा जा सकता है। हनुमान धारा वर्तमान में उत्तर प्रदेश के बांदा जिले की कर्वी तहसील तथा मध्य प्रदेश के सतना जिले की सीमा पर स्थित है।

कहते हैं चित्रकूट में आज भी हनुमान जी वास करते हैं जहाँ भक्तों को दैहिक और भौतिक ताप से मुक्ति मिलती है। कारण यह है कि यहीं पर भगवान राम की कृपा से हनुमान जी को उस ताप से मुक्ति मिली थी जो लंका दहन के बाद हनुमान जी को कष्ट दे रहा था। इस विषय में एक रोचक कथा है कि जब हनुमान जी ने लंका में अपनी पूँछ से आग लगाई थी तब उनकी पूँछ पर बहुत जलन हो रही थी। रामराज्य में भगवान श्री राम से हनुमान जी ने विनती की जिससे उनके पूँछ की जलन कम हो जाए, तब श्री राम ने अपने बाण के प्रहार से इसी जगह पर एक पवित्र धारा बनाई जो हनुमान जी की पूँछ पर लगातार गिरकर पूँछ के जलन को कम करती है।

यहां हनुमान जी का एक मंदिर है जिसे हनुमान धारा मंदिर कहते हैं जो इस घटना की याद दिलाती है। यहां भगवान श्री राम का एक छोटा सा मंदिर भी है। हनुमान जी के दर्शन करने से पहले नीचे बने कुंड में भरे पानी से हाथ – मुँह धोना पड़ता है। हनुमान धारा की सीढ़ियां बहुत ही लम्बी व ऊँची हैं तथा सीढ़ियों पर चढ़ने के लिये रेलिंग की भी व्यवस्था की गयी है जिसको आराम से भक्तगण पकड़कर सीढ़ियों पर चढ़ते हैं। हनुमान धारा में सीढ़ियों से कुछ ऊपर चढ़ने पर सीता रसोई आता है जहां माता सीता ने भगवान राम तथा देवर लक्ष्मण के लिए कन्दमूल से रसोई बनाई थी, जिसके चिन्ह आज भी यहां मौजूद हैं।

यहां हर मंगलवार और शनिवार के अलावा नवरात्रों और हनुमान जी के जन्मदिन पर श्रद्धालुओं की बड़ी भीड़ रहती है। हनुमान धारा के सीढ़ियों से ऊपर चढ़ने पर हम कई प्रकार के छोटे – छोटे मंदिरों को देखते हैं जिसमें बहुत सारे पुजारी लोग बैठे रहते हैं। हनुमान धारा के सीढ़ियों पर विभिन्न प्रकार के छोटे – छोटे दुकान लगे रहते हैं

जिससे हम अपनी आवश्यकताओं की वस्तुओं को खरीदते हैं। अंततः हनुमान धारा एक बहुत ही सुंदर तथा प्राकृतिक छटाओं से भरा है तथा यहां पहुँचने पर यात्रियों को सुख तथा शान्ति की अनुभूति होती है।



प्रयागराज



• प्रयागराज का इतिहास

प्राचीन समय में इस शहर को मूल रूप से 'प्रयाग' (संगम के स्थान) के नाम से जाना जाता था। यह एक प्राचीन शहर भी है। प्राचीन पवित्र हिंदू ग्रंथों में प्रयाग के लिये कई संदर्भ दिये गये हैं। यह एक ऐसा स्थान माना जाता है जहाँ ब्रम्हा (ब्रम्हांड के निर्माता) एक बलिदान के अनुष्ठान में भाग लिया था।

रामायण महाकाव्य युग के दौरान पवित्र नदियों के संगम पर कुछ ऋषि द्वारा झोपड़ियों से प्रयाग बनाया गया था और बहुत से ग्रामीण इलाकों में जंगल फैला हुआ था। भगवान राम (रामायण के मुख्य नायक), ऋषि भारद्वाज के आश्रम में चित्रकूट जाने से पहले यहाँ कुछ समय बिताया था।

15 वीं सदी के बाद अकबरनामा और आईने-अकबरी तथा अन्य मुगलकालीन ऐतिहासिक पुस्तकों से ज्ञात होता है कि अकबर ने सन् 1574 ई० के लगभग यहाँ की नींव डाली तथा इसका नाम इलाहाबाद रखा। 1858 ई० में इलाहाबाद को उत्तरी-पश्चिमी प्रान्तों की राजधानी बनाया गया।

वर्तमान समय में यह भारतवर्ष के उत्तर प्रदेश राज्य के एक जिले के रूप में विद्यमान है। अगर इसके पुर्नगठन पर ध्यान दिया जाय तो हम पाते हैं कि प्रयागराज मंडल एवं जिले में वर्ष 2000 में बड़े बदलाव हुए।

प्रयागराज मंडल के इटावा एवं फर्रुखाबाद जिले आगरा मंडल के अधीन कर दिये गये हैं, जबकि कानपुर देहात को कानपुर जिले में से काटकर एक नया कानपुर

मंडल बना दिया गया है। पश्चिमी प्रयागराज के भागों को काटकर नया कौशाम्बी जिला बनाया गया।

उत्तर प्रदेश की योगी आदित्यनाथ सरकार ने 16 अक्टूबर 2018 को इलाहाबाद का नाम फिर से प्रयागराज कर दिया है, यानी इस शहर को वही प्राचीनतम नाम फिर मिल गया है जो करीब चार सौ साल पहले था।

• भौगोलिक स्थिति एवं जलवायु

प्रयागराज की भौगोलिक स्थिति 25°27' उत्तर से 25°47' उत्तर तथा 81°50' पूरब से 81°84' पूरब है। उत्तर प्रदेश के दक्षिणी भाग में समुद्र तल से 98मीटर (322 फीट) की ऊँचाई पर गंगा और यमुना के संगम पर स्थित है। इसके दक्षिण-पूर्व में बुंदेलखंड, उत्तर एवं उत्तर-पूर्व में अवध और इसके पश्चिम में दोआब क्षेत्र है। दोनों नदियों के बीच की दोआब भूमि शेष दोआब की भाँति ही उपजाऊ किंतु कम नमी वाली है, जो गेहूँ की खेती के लिये उपयुक्त होती है।

प्रयागराज में तीन प्रमुख ऋतुएं आती हैं। ग्रीष्म ऋतु, शीत ऋतु एवं वर्षा ऋतु। ग्रीष्मकाल अप्रैल से जून तक चलता है, जिसमें अधिकतम तापमान 40°C से 45°C तक जाता है। मानसून काल आरंभिक जुलाई से सितंबर के अंत तक चलती है। इसके बाद शीतकाल दिसम्बर से फरवरी तक रहता है। तापमान यदा-कदा ही शून्य तक पहुँचता है। अधिकतम तापमान 22°C एवं न्यूनतम तापमान 10°C तक पहुँचता है। प्रयागराज में जनवरी माह में घना कोहरा रहता है, जिसके कारण यातायात एवं यात्राओं में अत्यधिक विलम्ब भी हो जाता है।

अंततः कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि यहाँ सभी ऋतुओं का समान प्रभाव रहता है जिसमें ग्रीष्मकाल में अत्यधिक गर्मी, शीतकाल में कड़ाके की ठंड तथा वर्षा ऋतु में मूसलाधार वर्षा होती है।

• धार्मिक महत्व

प्रयागराज का धार्मिक महत्व बहुत ही अधिक है। जब हम प्रयागराज के धार्मिक महत्व की बात करते हैं तो सबसे पहले हमारे विचार में कुंभ मेले का दृश्य सामने आता है कुंभ ने प्रयागराज के धार्मिक महत्व को अत्याधिक बढ़ा दिया है।

प्रयागराज में आयोजित धार्मिक मेले का अर्थ “कुंभ मेला” है। कुंभ मेले की परंपरा का इतिहास सिंधु घाटी की संस्कृति से भी पुराना है।

प्रयागराज एक तीर्थ स्थान है जहाँ तीन नदियों का क्रमशः गंगा, यमुना और सरस्वती का एक पवित्र संगम है, जिसे त्रिवेणी संगम के नाम से हिन्दुओं के एक पवित्र के स्थान के रूप में जाना जाता है। हर साल के हिन्दु महीने (माघ) में यहाँ इस पवित्र त्रिवेणी संगम पर एक मेला आयोजित किया जाता है जो माघ मेला के रूप में जाना जाता है और हर बारहवें वर्ष में आयोजित किया जाता है। यह कुंभ हर बारह वर्ष में

हरिद्वार, प्रयाग, उज्जैन और नासिक में आयोजित किया जाता है जो पूरे विश्व में विख्यात है।

प्रयागराज के धार्मिक महत्व को अधिक बढ़ाने में प्रयागराज में स्थित अन्य कई सारे मन्दिरों, देवालयों आदि स्थानों का विशेष रूप से योगदान है। इन सब संदर्भों से हम यह पाते हैं कि प्रयागराज का धार्मिक महत्व दिनों - दिन और भी अधिक बढ़ती जा रही है।

आनन्द भवन

आनन्द भवन, प्रयागराज में स्थित नेहरू – गाँधी परिवार का पूर्व आवास है जो अब एक संग्रहालय के रूप में है। वस्तुतः यह एक अपेक्षाकृत रूप से नया भवन है, जब मोतीलाल नेहरू ने इस नये भवन का निर्माण कराया और अपने पुराने आवास को कांग्रेस के कार्यों हेतु स्थानीय मुख्यालय बना दिया, पुराने आनन्द भवन का नाम स्वराज भवन कर दिया, इस नए आवास को आनन्द भवन कहा जाने लगा। नेहरू और



इंदिरा गांधी के जीवन की कई महत्वपूर्ण घटनाएँ यहाँ घटित हुईं। स्वतंत्रता आंदोलन में इस स्थान का ऐतिहासिक महत्व रहा है।

देश की आजादी से पहले आनन्द भवन कांग्रेस मुख्यालय के रूप में रहा और उससे भी पहले राजनीतिक सरगर्मियों का केंद्र रहा। पंडित नेहरू ने सन् 1928 में पहली बार यहीं पूर्ण स्वतंत्रता की घोषणा करने वाला भाषण लिखा। “ भारत छोड़ो ” आन्दोलन का प्रारूप भी यहीं पर बना।



सन् 1857 के प्रथम विद्रोह में वफादारी के लिए स्थानीय ब्रिटिश प्रशासन ने शेख फैय्याज़ अली को 19 बीघा भूमि का पट्टा दिया जिस पर उन्होंने बंगला बनवाया। सन् 1888 को यह जमीन और बंगला जस्टिस सैय्यद महमूद ने खरीदा और फिर सन् 1894 में यह जायदाद राजा जयकिशन ने खरीद ली।

मोतीलाल नेहरू ने 7 अगस्त 1899 में बीस हजार रुपये में 19 बीघे का बंगला राजा जयकिशन दास से खरीदा। 14 नवम्बर 1889 को मीरगंज स्थित मकान में जवाहर लाल नेहरू का जन्म हुआ। नेहरू जी जब दस वर्ष के थे, तब आनन्द भवन खरीदा गया और पूरा परिवार यहाँ आया।

इंदिरा गाँधी का जन्म भी आनन्द भवन में हुआ था। विरासत में बचा आनन्द भवन को इंदिरा गाँधी ने प्रधानमंत्री बनने के बाद 1 नवम्बर 1970 को जवाहर लाल नेहरू स्मारक निधि को सौंप दिया। सन् 1971 में आनन्द भवन को एक स्मारक संग्रहालय के रूप में दर्शकों के लिये खोल दिया गया।

वर्तमान में आनन्द भवन में जवाहर लाल नेहरू, मोतीलाल नेहरू, इंदिरा गाँधी के विभिन्न प्रकार के पोस्टर व चित्र लगाये गये हैं जिसमें उनके जीवन के बारे में तथा उनकी उपलब्धियों के बारे में बताया गया है।

आनन्द भवन में नेहरू जी के द्वारा उपयोग में लाये गये रोजमर्रा की जरूरतों को पूरा करने वाले विभिन्न प्रकार के साधनों को सुरक्षित एवं सुसज्जित करके रखा गया है, जिसमें टेलीफोन, स्टडी टेबुल, पुस्तकालय, आलमारी, सोने का बिस्तर, खाने के बर्तन, उनके विभिन्न प्रकार के वस्त्र, कलम, जूते व चप्पल, कई प्रकार के इत्र, आदि वस्तुओं को रखा गया है।

आनन्द भवन मंगलवार से रविवार तक 09:30am से 05:30pm तक खुला रहता है तथा सोमवार को यह बंद रहता है।



नेहरू जी के चाँदी के बर्तन

तारामंडल



तारामंडल भारत के उत्तर प्रदेश के प्रयागराज के शहर में स्थित है। यह सन् 1979 में बनाया गया था और यह एक साइंस म्यूजियम है। यह नेहरू - गाँधी परिवार के पूर्व निवास आनन्द भवन के पास स्थित है और अब एक संग्रहालय है। इसका प्रबन्धन “जवाहर लाल नेहरू मेमोरियल फंड” द्वारा किया जाता है, जिसका मुख्यालय टीन मूर्ति हाउस, नई दिल्ली में है।

ब्रम्हांड और ग्रहों - उपग्रहों की गतिविधियों को समझाने के लिए तारामंडल में एक स्काई थिएटर है जिसमें आने वाले स्कूली बच्चों और लोगों को कॉस्मिक शो दिखाया जाता है। थिएटर को खास तौर पर डोम शेप या गुम्बदाकार बनाया गया है। गुम्बदाकार इसलिए बनाया गया है ताकि आकाश का वास्तविक दृश्य पैदा किया जा सके और थिएटर के अन्दर बैठकर भी यह लगे कि आप अपनी छत से या खुले आकाश के नीचे बैठकर ही तारों को निहार रहें हैं यानि जब हम छत पर बैठकर आकाश को देखते हैं तो जैसा वह दिखाई पड़ता है वैसा ही थिएटर के अन्दर का माहौल बनाने की कोशिश की गई है।

सितारों की कहानियों और आकाशीय हलचलों को बयां करते ये शो एक खास प्रोजेक्टर के जरिए दिखाये जाते हैं। शो में दिखाई जाने वाली फिल्में आकाश में घटित हो रही ताजातरीन घटनाओं के अनुसार समय – समय पर बदल दी जाती है। बाद में पुराने शो में नई घटनाओंको मिलाकर एक नयी फिल्म बना दी जाती है ताकि नयी फिल्म में आने पर भी दर्शक पुरानी सामग्री से वंचित न हो जाये। हाल ही में दो नये शो हुए हैं, न्यू सोलर सिस्टम में प्लूटों की कहानी काफी दिलचस्प है दूसरी चन्द्रयान जो सिर्फ सुबह 11:30 बजे अंग्रेजी भाषा वाले शो में दिखाई जाती है।

तारामंडल में एक प्रदर्शनी भी लगाई गई है जिसमें फोटो और पेंटिंग्स के जरिये ग्रहों के बारे में समझाया गया है। इस प्रदर्शनी की खासियत है कि तस्वीरों के माध्यम से ग्रहों को समझना आसान होता है क्योंकि यह ज्यादा नजदीक व स्पष्ट होता है, इससे स्कूली बच्चों को नये विचार सोचने में मदद मिलता है। इसमें प्रोजेक्टर के द्वारा पृथ्वी से ब्रम्हांड तक का सैर कराया जाता है। तारामंडल में टिकट दर 60 रुपये प्रति व्यक्ति है। तथा तारामंडल कार्यक्रम की अवधि 45 मिनट का होता है।



पूरे सप्ताह भर - 11:00, 12:00, 01:00, 02:00, 03:00,
04:00, 04:45 ।

रविवार को - 10:45, 11:30, 12:15, 01:30, 02:15, 03:00,
03:45, 04:30 ।

इन सब विभिन्न समयों पर तारामंडल का कार्यक्रम संचालित किया जाता है।

आनन्द भवन के तारामंडल में हमने ब्रम्हांड के बारे में अधिक से अधिक जानकारी प्राप्त करने का प्रयास किया। तारामंडल में हमारे आकाशगंगा जिसका नाम मंदाकिनी है उसके बारे में हमने देखा। हमें सौरमंडल के सभी ग्रहों के बारे में बताया गया तथा सारे ग्रहों के उपग्रहों के बारे में भी बताया गया। इसके अलावा सौरमंडल में उपस्थित सभी कणों – चट्टानी पिंडों के बारे में विस्तृत रूप से बताया गया। तारा मंडल में यह भी बताया गया कि अगर पृथ्वी से हम चन्द्रमा पर जायें तो हमारे वजन में क्या अन्तर आयेगा। तारामंडल में प्रोजेक्टर के द्वारा चित्रों को दिखाया गया तथा विभिन्न ग्रहों की दूरियां तथा उनकी सूर्य से दूरियों को भी बताया गया। इसके अलावा तारामंडल में हमें वर्तमान समय में चल रहे विभिन्न प्रकार के खोज कार्यों के बारे में भी बताया गया जो कि अभी भी अन्तरिक्ष में चल रहे हैं।